



अथमनमौजचरित्र

निम्बार्क मतानुयायि परम भक्तवैष्णव
चतुरदास कृत
जिसमें

निजभक्तजन प्रणपालक असुर कुल घालक ब्रज
जनानन्ददाता चतुर्दश भुवनपाता वृषभानु
सुता मुखकमलप्रकाशी सर्वसुखराशी
श्रीकृष्णचन्द्र आनन्दकन्द और
राधिका महारानीकी लीला
आदि बहुत से
माहात्म्यउत्तमदोहासोरठाकुण्डलियाआदिसेवर्णितहैं

स्थानलखनऊ

मुंशीनवलकिशोरके छापेखानेमें छापागया
मार्चसन् १८८६ ई०

श्रीगणेशायनमः

अथ मनमौजचरित्र

दोहा ॥

श्री श्री श्री सतगुरु भजूं दुतिय बँदूंसर्वसाध। तृतीय
बँदूसतनंदकूँ दीजोबुद्धि अगाध १ रोमरोम ब्रह्माण्डके
राधा माधवईश । चतुरदासने पाइया कृपा करी जग-
दीश २ चतुरदास पावन भयो परशुराम परसाद ।
नगर सलेमाबादके मेरे गुरु अनाद ३ संप्रदाय से
युक्तिये गादीबड़ी विशाल । सुग राजन मानतरहो श्री
गुरुदीन दयाल ४ नगर सलेमा दर्शते पापरहत नहिं
पास । वहँ श्रीपति सर्वेश्वर चतुरजनों का दास ५ नग्र
सलेमाबाद की महिमा अगम अपार । सुर नर मुनि
जन रमिरहैं वा रजकूँशिरधार ६ चतुर तजासबमतनकूँ
पाया सत्स्वरूप । नवषट चतुर पुराण में राधामाधव
भूप ७ नवदश चौदासप्तमें श्रीधर एक सुजान । इनपद
रजकूँपरसके लाखों चढ़े विमान ८ रोम रोम ब्रह्मांडमें
वासुदेवनिज नाम ॥ जोजन निश्चय रटत हैं ताहिमुक्ति
निजधाम ९ श्रीगुपाल बिन दूसरा नाहिन तीनोंलोक।
महातत्त्वका तत्त्व है विरला पाया रोक १० आमग

निगम पुराणये कहैं कृष्णकरतार । अनन्तकोटिब्रह्मा-
 ण्डका चतुरा सिरजनहार ११ तारागण तेतीससुनशशि
 रवि इन्द्रमहेश । येतोपार न पाइया रटतभौमिधरशेश
 १२ चतुरदास याजगतमेंभला न दीखैकोय । तातेभज
 सतनंदकुं होनीहोयसो होय १३ राधा सर्वेश्वरहरी शिर
 भूपनके भूप । चतुरदास निम्बारक श्रीगुरु सत्स्वरूप
 १४ चेत चतुर भज कृष्णकुं जन्मवदित्या जात । मात
 पिता परिवारये नाहिनतेरे साथ १५ चतुरदासउम्मर
 चली जैसेनदियापूर । रोकीहू रुकतीनहीं जायमिलैगी
 धूर १६ चतुरदासगइ वक्तये बहुरिन पावैमित । अबहुं
 चेत बिगड्यो नहीं तजौसर्व मनचिंत १७ चतुरबड़ा अ-
 चरजसुनौमोममहलके बीच । हरिअग्रीजामें धरी तोहु
 न पिगलेमीच १८ चतुर चीजयेधूरकीधूरहिमें मिलजात ।
 यत्नकिये उबरै नहीं क्योमूरख पछितात १९ नास्वरूप
 नाशस्त्रअरु नाहिन दीखेघाव । हंसमार आगेकरै कोइ
 नबचावैदाव २० काल पवन चक्रोफिरै सबहुं डारेपीस ।
 चतुरभजो गोबिन्दकुं उवरा बिश्वाबीस २१ चतुरदास
 उम्मरचली जैसे मानोंरेल । वर्षवर्षइस्टेशन मासमास
 प्रतिमैल २२ पवनवेगते जातहै समझै नहीं अजान।काल
 ग्रसैयाबीचमें क्यो नभजै भगवान २३ पावपलकमेंजाय-
 गा नजर ओट ये खेल । श्यामा श्याम मनाय के करसहु-
 रुकी सैल २४ कायाका अंजनसुनो जठरा जलैमँझार ।
 श्वासाका पहियाअती क्योना भजेगवांर २५ तारखबर
 बीतहुमिले इत पिंगला प्रमान । नजीक पहुंचे कालसी

क्यों न भजै भगवान २६ एकसड़क सुरपुरगई दुतिया
 यमग्रस्थान । जैसातैसा टिकटले टेशन जानपिछान २७
 वा टेशनके बीचमें हाकिम पैसालेत । या टेशनके बीच
 में सहुरु हेल्लादेत २८ पुलावणी परसिद्धये तापैजाती
 रेल । चतुर चढ़ौ पुल भक्ति को वही करैगा सैल २९
 जगमगात कंदीलकी दोइ नैनन सूजान । अजब ख्याल
 हरि रचदिया कहलंगकहूं बखान ३० सब फंदनके
 बीचहैं सब फंदनसे दूर । चतुरदास ताकंरटै पूर्णानंद
 हजूर ३१ अष्टपहर चौंसठ घड़ी सुमिरौ दीनदयाल ।
 येतन कछू न कामका भजौ लाडिलीलाल ३२ हे
 श्वासा सुन वावरी भजियो दीनानाथ । दीसत है
 संसार का चलै न एको साथ ३३ हे जिह्वा सुन
 पापिनी रटत नाहिं दिनरैन । पटरस कूं चाबै घणी
 ताते नाहिंन चैन ३४ हेवतीसौ शूरमा रसन लगावो
 गैल । नातर काटि निकासिये मेट सकलये फैल ३५
 हेचक्षु चातुर गुणी निरखो श्याम स्वरूप । काम क्रोध
 मद लोभ ये तजौ मोहका कूप ३६ श्रवण सुनो तुम
 वावरी कीर्तन कथा रसाल । बुरी बुराई त्यागके
 भजियो गिरिधर लाल ३७ हे मस्तक प्रिय तू बड़ा
 झुके रहौ हरिपांय । यम जालिमसे ना डरौ श्यामा
 श्याम मनाय ३८ हेकंठ अभागी अंध सुन कंठी बिन
 जिनरेव । कंठीबिन भोजन तजौ कंठी कंठहि सेव ३९
 हे लिलाट लंबा सुभग बिन स्वरूपका सल । वा
 लिलाटको फोड़ियो धर्मरायजी मल ४० हेभुजसुंदर

मनमौजचरित्र ।

५

सुहावना शंख चक्र निज अंक । ऐसे नँदकूँ पायके
 घमसे रहौ निशंक ४१ हे पंजा परब्रह्मका जपजप
 जप निजनाम । अपने करसे दानदे खुशी होयँ घन-
 श्याम ४२ पग पवित्र तीरथ करौ वृंदावन ध्रुवलोक ।
 चौंसठ तीरथ परसके पारस हो तजशोक ४३ अनेक
 बात का यह सुनो ये देह चर्म स्वरूप । काम न
 आवे काहु के भज वृंदावन भूप ४४ मनुष्य देहकूँ
 पाय के वृथा न खोवो मित । आगे को सुख होयगा
 भज गोविंद निचिंत ४४ मेरी मेरी करतही योधागये
 अनंत । जिनगाया गोविन्दकूँ सोइ पायाहै अंत ४६
 वर्षा ऋतु सागर भर्यो ओषध पावतनाश । ऐसेतनये
 जायगो गोविंदके गुणभाश ४७ हे मतिमंद गोविंदकूँ
 भजहु दिवस अरु रात । अंतकाल यहि रक्षही यही
 मात अरु तात ४८ बालापन खेलत रह्यो तरुणहि भयो
 मदांध । वृद्ध बितायो शोचमें करकर घरको धंध ४९
 हे मन या अख्यानकूँ कहँ लग करूँ बखान । निश्चय
 भज गोविंदकूँ यह पूरण भगवान ५० हेमन पिउ पिउ
 जपतपपीडा अपनो अर्थ पिछान । ऐसेमन जपते रहो
 पूरण श्रीभगवान ५१ राधा माधव कूँ जपो सर्वलोक
 विख्यात । चतुर दास मतिना तजौ उमर बीतीजात
 ५२ अष्ट पहर चौंसठ घड़ी भूलिन कबहुं बिसार । राधा
 सखे अरु भजो ब्रह्मरूप करतार ५३ राधावर के नामसे
 चतुरा फिरै निशंक । निम्बारक गुरु देवकूँ पूजे राजा
 रंक ५४ कृष्ण हमारा इष्टहै कृष्ण उपासी संत ।

मनमौजचरित्र ।

६ सो गुरु मेरे जानियो हमरे वही महंत ५५ कृष्ण
 बिना नहि मानता अन्य देवकी सीख । कृष्ण हमारा
 ईश्वर रहूं कृष्ण की सीख ५६ गुरु सलेमाबाद के
 कृष्ण बताया मोय । सो मैं निश्चय करलिया होनी होय
 सो होय ५७ कृष्णहि सिरजनहार है कृष्ण सकल के
 पार । कृष्ण हमारा प्राण है कृष्ण आप करतार ५८
 कृष्णहि भार उतारियो जनकी करी सहाय । मोक्ष
 मुक्तिदे कृष्ण जो सोनिजलोक सिधाय ५९ सबसे न्यारा
 कृष्ण है रह्यो जगतमें छाया । कृष्ण कृष्ण रटता रहे वो
 नरनरक न जाय ६० ज्ञान हमारे कृष्णका ध्यान हमारा
 कृष्ण । श्रीकृष्णहिका दास हूं सुनो संतये प्रभ ६१
 शिरी कृष्णके नाम बिन ग्रंथ न मानूं एक । हरि व्यासिन
 का दास हों धरी कृष्णकी टेक ६२ जैसा हूं तैसा हरी
 तेरा हूं ब्रजराज । मैं मतिमंद गवां रहूं मेरी राखो लाज
 ६३ कृष्ण नाम रटता रहूं दिलसे करुन दूर । चतुर
 दास तो जा मिले जून दिया मैं पूर ६४ सिकलीगर
 तलवार का देत मोरचा खोय । चतुरदास का खो दिया
 कृष्णहि दीप सँजोय ६५ धनि वृंदावन मधुपुरी धनि
 यमुनाका नीर । धनि गोपी धनि ग्वालगउ धनि बंशी
 बटतीर ६६ धनि गिरिवर करपै धर्यो ब्रज रक्षणके
 काज । धनि वो यशुदा नंदजी सुत श्रीकृष्णमहराज ६७
 नावेकिन के पुत्र थे वेसर्वोंके बाप । भक्तन हित लीला
 रची जिनका धरियो जाप ६८ वन उपवन सो धन्य है
 शीतल मंद सुगंध । संपूरण ब्रजगोपिका तिनसंग कियो

अनंद ६६ नंदग्राम सो धन्य है धनि बरसाना देश ।
 श्यामा श्याम रहे तहां सुन्दर बारी वैश ७० धनि
 चौरासी कोसहै जहँ हरिकियो अनंद । लतापता गिरि
 कूपमें दर्श देत गोविन्द ७१ धन्य धन्य वा भूमि को
 जहँहरि कियो बिहार । जो वा रजकूँ शिर धरै सोहि
 जगत के पार ७२ वृन्दावन महिमा घनी रचना अगम
 अगाध । सुर नर मुनि जन रमि रहैं बसैं विप्र अरु
 साध ७३ अगम निगम सुख व्यास ये शंकर कियो
 बखान । शेषशारदारटतहैं वृन्दावनभगवान ७४ सन-
 कादिक ब्रह्मादि मुनि इंद्रादिक तेतोश । वृन्दावन गौ
 लोककी कथा कहीजगदीश ७५ प्रियपीतम शृंगारकी
 महिमा अगम अपार । सुरनर मुनि पावैं नहों ढूढ़ ढूढ़
 गयेहार ७६ द्विज वैष्णव अरु वैश्य पुनि रवि शशि
 दोनोंवंश । कृष्णनामरटतेरहैं जो देवनका अंश ७७
 कृष्णजपौ निजप्रेममें रामानुज मुनि साध । चतुरदास
 ने पाइया आदि अनादी नाद ७८ चतुरा अटक्या
 ढूढ़ के निम्बारक निजधाम । राधावर घनश्याम
 का माधव लीने नाम ७९ काजसुधारा जगतका वि-
 ण्णुश्याम महाराज । भक्तनहित दर्शन दिया बाल रूप
 ब्रजराज ८० परशुराम सुरधन्यहैं श्रीहरिवासी संत ।
 राधावर घनश्यामको गावैं संत महंत ८१ श्वासश्वास
 भजकृष्णकूँ वृथाश्वास जिनखोय । सुनमनमूरख बावरा
 होनी होय सो होय ८२ श्रीकृष्णहि महाराज कूँ भजुरे
 मनुवा मित । राधावर के शरणमें लेटेरहौ निचिन्त ८३

धन सगा न ये मन सगा सगा हमारा कृष्ण । मनत
 सुनले बावरा तोकूं होइहै दृष्टां ८४ शिरीकृष्णकरतारहैं
 आदिअन्तकोमूर । तातेहरिकूं छांडकैकौनसमेटैधूर ८५
 कर्म रेख कृष्णहिलिखी कोहै मेटनहार । लिखनाथा सो
 लिखदिया क्योंनाभजैगवांर ८६ सुखदुखयासंसारका
 लिखिधाकृष्ण विचार । सुन मनमूरख बावरे करनहार
 करतार ८७ और देव मुझ को कहैं मानूं नहीं लगार ।
 कृष्ण नाम रटतारहूं चतुर्वेदका सार ८८ परनारीनहिं
 भोगऊं अन्य देव मम झूठ । होनी होयसोहोइ या प्रिय
 पीतम रस लूट ८९ नरनारी शिशु कारने देव पीर अ-
 स्थान । प्रार्थना करताफिरै जिमिटुकरनफिरैश्वान ९०
 हरि व्यासिन परतापसे पाया पूरणज्ञान । गुरुसमर्थ्य
 ऐसे कही राधा श्याम सुजान ९१ निम्बारक गुरु मान
 ये ये उपासना धार । दंभिन कोनहिं मानियो भजियो
 सिरजनहार ९२ शिव शारद गणपति रटैं चतुरानन
 अहिशेष । सनकादिकब्रह्मादिमुनिइन्द्रादिकबनवेष ९३
 अवधपुरी मधुपुरिबसौ गावोसियवरजोय । अवध्यमानो
 श्यामको होनीहोयसोहोय ९४ इनचरणनकी धूरसे तरी
 अहल्यानार । वो मेरेशिरपरपड़ौ चतुराकरै पुकार ९५
 सोरठा ॥ शिराम सुतघनश्याम चतुरदासचिन्तातजौ ।
 जपौ कृष्णकानाम कामसुधारो केशवा ९६ शिरीकृष्ण
 करतार भर्ता सारे जगत का । जगत कियो बिस्तार
 कार लगाई सिंधुकी ९७ कृष्ण जपौ जन भिंत विष्णु
 बिहारी सुगुणतुम । करकर मनसेचिंतसहायकरैं सीता

पत्नी ६८ शिरीकृष्ण महाराज लाजराखियो भक्त की ।
तुमहिंसुधारनकाज आयमिले तुमतीन कूं ६६ बिहारी
वैष्णवदास खास तिहारो दासजी । यहिचातुर के आस
मौजकरेरनापुरी १०० कुंडलिया ॥ नन्द नंदन सुमि-
रयो नही पजत कलिमें भूत । अंतफजीतो होय गोजंगणिका
कोपत ॥ जंगणिकाको पूत बाप को किसे बतावै । आगे
कोदुख होय जभी वो यमपुर जावे ॥ कहै चतुरदास भज
कृष्णकूं होय न आगेदुःख । मोक्ष मुक्तिकूं पाय के आगे
पावे सुःख १ कृष्णनामकूं गावरे कर कर मनमें चिंत ।
दंभीदुष्ट को त्यागियो सुनो श्याम रतमिंत ॥ सुनो श्याम
रतमिंत कलीमें केहि पाखंडी । साधू को धर स्वांग बड़े
बेढगिया झंडी ॥ कहै चतुरदास कर जोर भूलधोको जिन
खावो । आदि सनातन धर्म भूल तुम जिन बिसरावो २
आदिब्रह्म श्रीकृष्ण हैं शक्ति राधिकामान । दोइ सरूप
सत एक है कहं लग कहूं बखान ॥ कहं लग कहूं बखान
चढ़ो बैकुंठ मंझारा । अवागवन मिटि एक खुलेगा मोक्ष
कद्वारा ॥ कहै चतुरदास कर जोर भजो घनश्याम कूं ।
मोह माया कूं जीत चढ़ो निज धामकूं ३ कृष्णनाम रटते
रहौ दूजो नाहिं उपाय । आदिकितेही तरगये राधा नाथ
मनाय ॥ राधा नाथ मनाय पाप कूं अग्नि जलावो ।
बरणो हरिके दास वास पीछे नहिं आवो ॥ कहै चतुर-
दास मानत रहौ सुमिरो सिरजनहार । दंभिनको मत
मानियो गावो ब्रह्मपुरार ४ द्वादशशतसी कन्दहैं श्री
कृष्णहि कीएन । द्विज वैष्णव बांचे सुने मर्यादा के बैन ॥

मर्यादाकेवैन श्यामघशसुनियोमिंता । बांचे सुने सुजान
 जिन्होंकी गई है चिंता ॥ कहै चतुरदासकरजोर के सुनियो
 संत सुजान । श्रीभागवत शुकनेकही सो अमृतकी खान
 ५ प्रतिमा पूरणब्रह्मकी साक्षात पहिचान । विषकं मीरा
 पीगई चरणामृतको जान ॥ चरणामृतको जानरूपमें रूप
 मिलायो । यहप्रतिमा परमान भक्तमाला में गायो ॥ कहै
 चतुरदास सज्जनसुनौ साखीभरी गोपाल । वृद्धविप्र कं
 जानिके गये उड़ीसेलाल ६ प्रतिमाकं पत्थर कहै सोई
 हरामीजान । जिनकेमुखकारेभये धर्मराय अस्थान ॥ धर्म
 राय अस्थान कहूं मैं जिनकीलीला । अष्टाबीस जो नरक
 तहांपर खूबहिपीला ॥ कहैचतुरदासपुकार भजोधनश्याम
 कूं । श्यामा श्याममनायचढ़ौ निजधामकूं ७ हरि मन्दिर कूं
 जाय हरीको शीश नवावो । चरणामृत परसादप्रीति से
 नितउठिपावो ॥ प्रीति से नितउठिपावो । सो बैकुंठैजाय
 आवागवनमिटायकैरहैमुक्तिको पाय ॥ कहैचतुरदाससोई
 धन्यहैगावैकृष्णमुरार । परमारथकरतेरहौआयमिलैकर
 तार ८ प्रतिमा ने पहुंचादिया सुनौमित्र सुखपायाप्रतिमा
 राधाकन्तकी महिमाकही न जाय । महिमाकही न जाय
 प्रकटडाकोर बखानो । तुलसी नरसी भक्तकंचनीमुगट पि-
 छानो ॥ कहैचतुरदासकरजोर विप्रनेखूब जिमाई । सजना
 नामकी प्रीतिजगतमेंजाहिर भाई ९ प्रतिमाने पहुंचादिया
 कहैलगकहूंवनाय । प्रतिमाकंमानेनहीं सोईहरामीराय ॥
 सोई हरामी राय नरकका वो अधिकारी । प्रतिमा तजे
 सो मूढ़ ताहिदुख भयोखरारी ॥ कहै चतुरदास गुरुज्ञान

से तोहिं समझावेअंध । दंभिन मुख काजलधर्यो छांडो
 कलिकेफंद १० कृष्णनामकी लूटहै लूट सकै तो लूट ।
 नहिं आगे पछितायगो धरी पापकीमूठ ॥ धरीपापकी
 मूठजमारा रोवत खोयो । आगू मालुमहोय अभीतु सुख
 भर सोयो ॥ कहैचतुरदास समुझायकृष्णकूंमानरे । पर-
 ब्रह्म करतार सत्यये जानरे ११ हे मनमूरख बावरा
 समझायो कइबार । समझायो समझै नहीं खावे कूं
 हुशियार ॥ खावेकूं हुशियारभजनबिन जन्म गवांयो ।
 भगवतसे नहिंनेह रोवतो घमपूर धायो ॥ कहै चतुर
 दास करजोर के भजरे कृष्ण सुजान । यह अवसर
 पावैनहीं आगेपड़े पिछान १२ घर बन बागबजार में
 सुमिरौ आदि मुरार । मात पितासे हुक्मले मनभक्ती
 बिस्तार ॥ मनभक्ती बिस्तार शिरीचुन्दावन जावो ।
 परब्रह्म पहिचान चरणमें शीशनवावो ॥ कहैचतुरदास
 करजोरभजन टकसाल है । जांहर परखौ दामसत्य घन
 श्याम है १३ अष्टादश नवषट् चतुर औरौ ग्रन्थकरोड़ ।
 यही वचनमानतरहौ दुष्टनकूं दोछोड़ ॥ दुष्टनको दो छोड़
 परमसुख होहिहै आगे । निम्बारकपदपूज अरेमनपरम
 अभागो ॥ कहैचतुरदासपूकारजन्मयों जातहै । भज चुन्दा
 बनचन्द बहुरिनहिं आतहै १४ ब्रह्मा शेषमहेश रटत हरि
 नामकूंरविशशिइन्द्रगणेश चढ़ेनिजधामकूं ॥ चढ़ेनिजधाम
 कूं अमरहोइहरिगुणगावै । नारद शारद बरुणध्यानकूबे-
 रलगावै ॥ कहै चतुर दास करजोर भजो घनश्यामकूं ।
 तेतीसकोटि मिलिदेव जपे निजनाम कूं १५ हनुमत

नारद गरुड़जी सनकादिक इन्द्रादि । कश्यप अदि-
 तीगंधूब ब्रह्मादिकहु अनादि ॥ ब्रह्मादिकहु अनादिकृष्ण
 के गुणकूंगावैं । तारा गण अरु मेघ यक्ष किन्नरहि म-
 नावैं ॥ कहै चतुरदास कर जोर भजे यम श्यामकानव
 ग्रह चौकी देत भक्ति की धामकं १६ बालमीकि शुक
 व्यास मुनी गौतम गुणगावैं । विश्वामित्र वशिष्ठ बाम
 हरिदेव मनावैं ॥ बाम हरिदेव मनावैं ताहि को भृगु
 यशगावैं । भरद्वाज कात्यायन कृष्णकूं सींगीधावैं ॥
 कहैचतुरदास घनश्याम लोमश धरतध्यान । कलियुग
 कोई पासन डमें क्याजानें बेइमान १७ दुर्बासा प्रह-
 लाद भजे रामानुज नामी । माधव विष्णु श्याम
 गुरु निम्बारक स्वामी ॥ गुरु निम्बारक स्वामि कृष्ण
 का ध्यान लगावैं । अंबरीष हरि चन्द संत मोरध्वज
 ध्यावैं ॥ कहै चतुरदास करजोर भजौ सतनन्द कूं ।
 तरगये लाखों भक्त छांडसब फंदकूं १८ कलि अथंग
 गंभीरमें कृष्ण स्वरूपी नाथ । सुगरा सुगरा तिरगये
 नुगरा डूबेजाय ॥ नुगरा डूबेजाय श्यामसपने नहिंजानैं।
 श्रीकृष्णहि कूं त्याग दंभपाखंडी मानैं ॥ कहै चतुरदास
 गुणगाय समझ मन मूरख धोंदू । अवसर बीत्यो जाय
 भजन कर मूरख भोंदू १९ या जग देखतजातहै राजा
 रंक फकीर । भाइ बन्धु सजन सगा रहेन एकोतीर ॥
 रहेन एको तीर काल सबही को खावे । जो गावेगो-
 बिंद बहुरि पाछे नहिं आवे ॥ चतुर दास सोइ धन्यहै
 गुणगावे गोपाल । विप्रसाधु पूजतरहै ताहि न परसै

काल २० क्षीरसिंधु श्रीनाथजीशेषनाग की सेज । चरण
हलासैं लक्ष्मी कोटि भवनसों तेज ॥ कोटि भवनसों तेज
श्वास जिन वेद प्रकासैं । नाभि कमल के बीच चतुर
मुख वेद हुलासैं ॥ कहै चतुरदास करजोर मेरो यहईश
हैं । भृकुटी से त्रिपुरार हरी जगदीश हैं २१ धन्यधन्य
गुरुदेव धन्य वो नगर सलेमा । धन्य शिरीगोपालधन्य
वो भक्ति परेमा ॥ धन्य वो भक्तिपरेमा दासहरि व्या-
सिनपाई । आवागमन मिटाय चतुर के आनंद साई ॥
कहै चतुरदास धनिरामगंगहै मात हमारी । भ्रात एक
घनश्याम भक्तीगायन बिस्तारी २२ दोहा ॥ राधासर्वे
श्वरहरी परब्रह्मकरतार । चतुरदास चिन्तातजोसुमिरौ
सत्यमुरार १ रत्नपुरी आनंद मयइन्द्र शिरीरणजीत ।
चतुरदास जेहि पोरपै गावे परम पुनीत २ वा साहब
श्री सोदणी मन्दिर कियो तयार । सोइ सज्जन मम
धामहै जाहिर जप्योमुरार ३ सप्तपहरदिनदोयमें ग्रन्थ
कियोबिस्तार भूलचूक ककुहोय तौ लीजोसंतसुधार ४
पिंगलमतजानूं नहीं पढ्योन बेदपुरान । मैंम्हारी मत
सारुं दीनोग्रन्थबखान ५ संबतपुरानाजानियो सौऊपर
पैंतीस । जेठमासबदिदूजकूं पूरण बिश्वाबीस ६ जोकोई
येबांचेसुनेसो जनभक्तकहाय । चतुरदास निश्चयरटै सो
बैकुंठैजाय ७ मनकेहारेहारिहै मनहूंसेपरतीत । चतुरदास
मनहीकहा मनकेजीतेजीत ८ इतिश्री जंबूद्वीपे भरतखण्डे
अवंतीस मैरतपुरी मध्ये बैष्णव हरि व्यासी चतुरदास
विरचिते निम्बार्क प्रताप मनमौज चरित्र सम्पूर्णम् ॥